अध्याय 7

हामान को मृत्यु-दण्ड

अध्याय 6 में, हामान का निरादर किया गया; अध्याय 7 में, उसे फाँसी दी गई! उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया, विचित्र बात यह है जो फाँसी का खम्भा उसने मोर्दकै के लिये बनाया था उस पर उसे चढ़ा दिया गया। जैसे ही हामान की यहूदियों की हानि के प्रयास की कहानी समाप्त हुई, रानी एस्तेर ने अन्ततः राजा को उसके निवेदन के बारे में बताया। उसने प्रगट किया कि वह एक यहूदी थी और उसने अपने पति को सूचित किया कि हामान उसे और उसके लोगों को नष्ट करने का प्रयास कर रहा है। क्रोधित राजा ने हामान को मृत्यु दण्ड दिया।

एस्तेर ने दूसरी बार भोज दिया (7:1-6)

[1]अत: राजा और हामान एस्तेर रानी के भोज में आ गए। [2]राजा ने दूसरे दिन दाखमधु पीते-पीते एस्तेर से फिर पूछा, "हे एस्तेर रानी! तेरा क्या निवेदन है? वह पूरा किया जाएगा। तू क्या माँगती है? माँग, और आधा राज्य तक तुझे दिया जाएगा।" [3]एस्तेर रानी ने उत्तर दिया, "हे राजा! यदि तू मुझ पर प्रसन्न है, और राजा को यह स्वीकार हो, तो मेरे निवेदन से मुझे, और मेरे माँगने से मेरे लोगों को प्राणदान मिले। [4]क्योंकि मैं और मेरी जाति के लोग बेच डाले गए हैं, और हम सब घात और नष्ट किए जानेवाले हैं। यदि हम केवल दास-दासी हो जाने के लिये बेच डाले जाते, तो मैं चुप रहती; चाहे उस दशा में वह विरोधी राजा की हानि भर न सकता।" [5]तब राजा क्षयर्ष ने एस्तेर रानी से पूछा, "वह कौन है, और कहाँ है, जिसने ऐसा करने का निश्चय किया है?" [6]एस्तेर ने उत्तर दिया, "वह विरोधी और शत्रु यही दुष्ट हामान है!" तब हामान राजा-रानी के सामने भयभीत हो गया।

एस्तेर द्वारा राजा और हामान को दिए गए दूसरे भोज में, उसने अन्ततः क्षयर्ष को बताया कि उसे कौन सी बात व्याकुल कर रही थी।

आयत 1. "राजा के खोजे" (6:14) द्वारा अपने ही घर से शीघ्रता में निकाले जाने के बाद, **हामान राजा** के साथ एस्तेर के कक्ष में, भोज में जो उसने तैयार किया था शामिल होने के लिये आए।

आयत 2. दूसरे दिन का संदर्भ दो-दिवसीय भोज के दूसरे दिन को संदर्भित नहीं करता है, परन्तु एक अलग भोज का जो अगले दिन दिया गया था।[1] **भोज में**

दाखमधु पीते-पीते, शाब्दिक रूप से "दाखमधु के भोज में।" इस अवसर पर, राजा ने **एस्तेर** से (तीसरी बार) पूछा कि वह क्या चाहती है। पहले कहे गए शब्दों को दोहराते हुए उसने, पूछा, **"तेरा क्या निवेदन है? ... । तू क्या माँगती है?"** (देखें 5:3, 6)। एक बार और, उसने उसे वह देने का वचन दिया जो वह चाहती थी, **आधा राज्य तक तुझे दिया जाएगा** (देखें 5:3 पर टिप्पणियाँ)।

आयत 3. एस्तेर ने विनम्रता और उदारता से उत्तर दिया, **राजा** का उसके प्रति जो व्यवहार था उसके अनुसार वह अपने निवेदन को रखना चाहती थी (**"तू मुझ पर प्रसन्न है"**) । उसने कहा कि वह केवल वही चाहती है जिससे राजा को प्रसन्न हो (**"यदि राजा को यह स्वीकार हो"**)। फिर उसने राजा की बातों को दोहराते हुए सीधे अपनी चिन्ता के विषय में बात की: उसने कहा कि उसका **निवेदन** उसका **प्राणदान** था, और उसका **माँगना** उसके लोगों का प्राणदान था। "एस्तेर का निवेदन केवल चार इब्रानी शब्दों में मौखिक रूप से उद्धृत किया गया है, ... हिन्दी में जिसका अनुवाद, मेरे निवेदन से मुझे, और मेरे माँगने से मेरे लोगों को प्राणदान मिले।"[2] फलस्वरूप, उसने कहा, "मैं जीवित रहना चाहती हूँ, और मैं चाहती हूँ कि मेरे लोग भी जीवित रहें!"

आयत 4. एस्तेर ने तुरन्त समझाया कि उसके लिये उनके प्राणदान माँगना क्यों आवश्यक था: वह और उसकी **जाति के लोग बेच डाले गए** थे, उसके **लोग घात और नष्ट किए जानेवाले** थे। शब्दों के उसके इस चयन ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह राजा के विषय हामान की युक्ति और नीतियों की बारीकियों के बारे में जानती थी। अन्ततः, यहूदियों के विनाश के लिये उसके तीन शब्द - "नष्ट," "घात," और "सत्यानाश किए जानेवाले हैं" - नीतिवचन (3:13) के वास्तविक शब्दों को प्रगट करते हैं। यह विचार कि उसे और उसके लोग "बेच डाले गए हैं" सम्भवतः रिश्वत का उल्लेख करता है जिसका वचन हामान ने राजा को दिया था। एक और सम्भावना यह है कि वह केवल यह कह रही थी कि उन्हें "छोड़ दिया जाए" या "जाने दिया जाए।"

एस्तेर ने फिर कहा कि, यदि उसके लोग **केवल दास-दासी हो जाने के लिये बेच डाले जाते**, तो वह राजा को इस मामले में कष्ट नहीं देती। उसने कहा, **"... चाहे उस दशा में वह विरोधी राजा की हानि भर न सकता।"** केरी ए. मूरे ने टिप्पणी की कि यह "निःसंदेह यह एस्तेर की कही गई बातों में अनुवाद करने का सबसे कठिन वाक्यांश है, मुख्यतः क्योंकि इसमें छः में से तीन शब्दों के अर्थ अनिश्चित हैं।"[3] "उस दशा में हानि भर न सकता" का अनुवाद "शत्रु क्षतिपूर्ति नहीं कर सकता" किया जा सकता है और "हानि" को "क्षति" या "नुकसान" कहा जा सकता है। अनुवाद की कठिनाई तब स्पष्ट होती है जब कोई भिन्न संस्करणों की तुलना करता है। कम से कम चार व्याख्याएँ दी जाती हैं: (1) एस्तेर के लोगों का दासत्व राजा के लिये समस्या उत्पन्न करे उचित नहीं होगा। (2) उनकी दासता ने राजा के हितों को क्षति नहीं पहुँचाई होगी। (3) उनकी दासता की तुलना राजा को होने वाली हानि (यदि उन्हें मृत्युदण्ड दिया जाता) से नहीं की जा सकती। (4) हामान ने जो भरपाई की थी उसकी तुलना राजा को हुई हानि से नहीं कर

सकते। "हानि" यहूदियों द्वारा चुकाए गए कर राजस्व को संदर्भित कर सकता है, जो अब नहीं दिया जाएगा।[4]

शायद एस्तेर के उत्तर का सबसे महत्वपूर्ण भाग उसकी पहचान उसके लोगों के साथ है। इससे पहले वह मोर्दकै की सलाह पर, एक यहूदी के रूप में अपनी पहचान छिपाती थी। अब, उनके विनाश का सामना किया और इस तथ्य के साथ कि वह सम्भवतः उनके साथ नष्ट हो जाएगी, उसने खुले रूप से लोगों से अपना दावा किया और अपने लक्ष्य को उनके साथ पूरा किया। उनके साथ जो हो वह उसके साथ होगा। सम्भवतः, रात के खाने में उसका प्रकटीकरण कि वह एक यहूदी थी ने हामान और क्षयर्ष दोनों को आश्चर्य चकित कर दिया।

एस्तेर ने अपने निवेदन को बुद्धिमानी और दृढ़ता से प्रस्तुत किया। वह विनम्र और उदार थी; वह इतनी छोटी सी बात को लेकर राजा से क्षमा निवेदन करने लगी थी। उसके शब्दों ने स्पष्ट रूप से संकेत दिया कि वह जानती थी कि हामान ने राजा को रिश्वत दी थी (यहूदियों को "बेच दिया गया था"); और उसने आदेश जारी करने में राजा की भूमिका को अनदेखा करते हुए, हामान पर सारा दोष डाल दिया।

आयत 5. जब **रानी एस्तेर** ने उससे निवेदन करके कहा, तब राजा ने उससे **पूछा,**[5] **"वह कौन है, और कहाँ है, जिसने ऐसा करने का निश्चय किया है?"** राजा को अब मालूम हो चुका था कि "उसकी प्रिय रानी के विरुद्ध रिश्वतखोरी और उसके जीवन के लिये खतरा होने का अपराध किया गया था"; परन्तु "अभी तक अपराधी की पहचान नहीं हुई थी।"[6] राजा ने पूछा, "ऐसा दुस्साहस किसने किया था?" क्योंकि यहूदियों को नष्ट करने का आदेश उसके नाम से जारी किया गया था, वह ऐसा प्रश्न क्यों पूछता? जॉन डी. लेवेंसन ने तीन सम्भावित उत्तर दिए, जिनमें से कोई भी राजा के सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत नहीं करता है। (1) वह किसी भी जिम्मेदारी से बच रहा होगा, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि वह अनभिज्ञ था कि एस्तेर लोगों के घात किए जाने से प्रभावित होगी। (2) उसने स्मरण किया कि उसने कुछ समूह को नष्ट करने का आदेश दिया था, परन्तु इस बात से उदास था कि जिस व्यक्ति ने इस विनाश का प्रस्ताव रखा था, उसने उन्हें सूचित नहीं किया कि समूह में उसकी प्रिय रानी भी शामिल है। (3) वह बहुत उदास या भ्रमित हो सकता था (शायद बहुत अधिक दाखमधु पीने से) कि वह लोगों के घात किए जाने के बारे में भूल गया था।[7] जो भी स्पष्टीकरण है, राजा के निवेदन ने एस्तेर को वह अवसर दिया जो वह माँग रही थी: हामान पर आरोप लगाने का इशारा करते हुए।

आयत 6. एस्तेर ने क्षयर्ष का उत्तर देने में कोई समय बर्बाद नहीं किया: **"वह विरोधी और शत्रु यही दुष्ट हामान है!"** उस युक्ति को उसने सावधानीपूर्वक बनाया था और अब उसके पूरा होने का समय आ गया था। राजा की उपस्थिति में, उसने व्यक्तिगत रूप से हामान का सामना किया और उसपर आरोप लगाते हुए बताया कि वह कौन था: "एक विरोधी," "एक शत्रु," और एक "दुष्ट" मनुष्य। अपने लोगों को बचाने के लिये, एस्तेर को सबसे पहले उस व्यक्ति को सामने लाना था

जो उनका सम्पूर्ण विनाश करने के लिये जिम्मेदार था। उसका उद्देश्य क्षयर्ष को यह स्पष्ट करना था कि हामान न केवल यहूदियों का विरोधी था, बल्कि वह राज्य का शत्रु और राजा का द्रोही भी था। उसने उन लोगों की जाति के विनाश का प्रबन्ध किया था जो विश्वासयोग्य नागरिक थे।

उस समय, हामान जान चुका था कि उसकी मृत्यु निश्चित है। उसके पास मृत्युदण्ड से बच निकलने की कोई आशा नहीं थी। आश्चर्य की बात नहीं कि वह **राजा-रानी के सामने भयभीत हो गया** था!

राजा का हामान को मृत्युदण्ड सुनाना (7:7-10)

[7]राजा क्रोध से भरकर, दाखमधु पीने से उठकर, राजभवन की बारी में निकल गया; और हामान यह देखकर कि राजा ने मेरी हानि ठान ली होगी, एस्तेर रानी से प्राणदान माँगने को खड़ा हुआ। [8]जब राजा राजभवन की बारी से दाखमधु पीने के स्थान में लौट आया तब क्या देखा कि हामान उसी चौकी पर जिस पर एस्तेर बैठी है झुक रहा है; और राजा ने कहा, "क्या यह घर ही में मेरे सामने ही रानी से बरबस करना चाहता है?" राजा के मुँह से यह वचन निकला ही था, कि सेवकों ने हामान का मुँह ढाँक दिया। [9]तब राजा के सामने उपस्थित रहनेवाले खोजों में से हर्बोना नाम एक ने राजा से कहा, "हामान के यहाँ पचास हाथ ऊँचा फाँसी का एक खम्भा खड़ा है, जो उसने मोर्दकै के लिये बनवाया है, जिसने राजा के हित की बात कही थी।" राजा ने कहा, "उसको उसी पर लटका दो।" [10]तब हामान उसी खम्भे पर जो उसने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था, लटका दिया गया। इस पर राजा का गुस्सा ठण्डा पड़ गया।

आयत 7. लेखक ने उन दो पुरुषों से दो अलग-अलग प्रतिक्रियाओं को बताया है जिन्होंने एस्तेर के आरोप को सुना था। **राजा, दाखमधु पीने से** क्रोध से भर गया और **राजभवन की बारी में निकल गया**, उनमें से एक ने सम्भवतः स्वयं पर नियन्त्रण पाया और तय किया कि इस दयनीय स्थिति के बारे में आगे क्या करना है। राजा का क्रोध उस दुविधा से दूर किया जा सकता था जिसका सामना वह अब कर रहा था। यह मानते हुए कि उसे स्मरण है कि अन्ततः वह उस आदेश के लिये जिम्मेदार था, जो यहूदियों के विनाश का कारण बनता, उसे यह सोचकर चिन्तित होना पड़ा कि वह स्वयं की निन्दा किए बिना हामान की निन्दा कैसे कर सकता है और वह एस्तेर, एक यहूदी और उसके लोगों को कैसे बचा सकता है जब उसने उनके विरोध में एक अपरिवर्तनीय आदेश जारी किया था।[8]

दूसरी बात, **हामान**, **एस्तेर रानी से प्राणदान माँगने को खड़ा हुआ**। उसकी एकमात्र आशा दया की याचना थी; शायद उसने सोचा कि वह रानी को अपनी ओर से मध्यस्थता करने के लिये राजी कर सकता है और **राजा** उसके प्राण को छोड़ देगा।

आयत 8. सहायता के लिये हामान की विनती उसका पतन था। जब वह अपने

प्राणदान माँगने को खड़ा हुआ, वह **उसी चौकी पर जिस पर एस्तेर बैठी थी झुक रहा** था। फारस में यह रिवाज लोगों के लिये तब होता था जब वे भोज में खाना खाते थे। शायद, एस्तेर अभी भी चौकी पर वैसे ही बैठी थी जैसा वे भोज के समय बैठते थे। एच. नील रिचर्डसन ने सोचा कि हामान का "चौकी पर झुकना" "लोभी स्वभाव और शायद प्राचीन निकट पूर्व में सामान्य नम्र निवेदन की भावना को पाँवों को [एस्तेर के] चूमकर प्रगट करने के उद्देश्य से था"[9] (देखें 8:3)। इस कथन का अर्थ है कि वह अपमानजनक स्थिति में अपने पैरों पर घुटने टेक रहा था या वह गलती से रानी पर गिर गया था अनिश्चित है। या फिर, वह उन नियमों का उल्लंघन कर रहा था जो राजा की पत्नियों और रखेलियों पर लागू होते थे।[10]

क्षयर्ष ठीक समय (या गलत समय) पर **राजभवन की बारी से लौट आया** और हामान को उस झुकी हुई मुद्रा में देखा। **राजा** ने एक आश्चर्यजनक प्रश्न पूछा: **"क्या यह घर ही में मेरे सामने ही रानी से बरबस करना चाहता है?"** शायद उसे विश्राम मिला: उसे यहूदियों के विरुद्ध अपने अपराधों के लिये हामान के साथ विचार विमर्श नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि रानी से बरबस करने का प्रयास करने पर वह अब उसे बाहर निकाल सकता था।! जो सेवक उसके पास थे उन्होंने **राजा के** वचनों को मृत्युदण्ड के रूप में मान लिया, इसलिये उन्होंने **हामान का मुँह ढाँक दिया**।[11] उसे मृत्युदण्ड दी गई।

आयत 9. सेवकों के लिये केवल एक ही निर्णय बच गया "हामान का मुँह ढाँकने" (7:8) के बाद जो उसकी मृत्युदण्ड का समय, स्थान और तरीका था। राजा के सेवकों में से एक, **हर्बोना**, **मोर्दकै** की हत्या करने की हामान की योजना के बारे में जानता था, और उसने **राजा** को इसके बारे में बताया। उसने कहा **हामान** ने अपने **यहाँ पचास हाथ ऊँचा: का एक खम्भा खड़ा** किया था, जो उसने मोर्दकै को फाँसी देने के लिये बनवाया है, (5:14), जिसने राजा के प्राण बचाए थे (2:21-23)। इस समाचार से राजा को हामान को मारने का दूसरा कारण मिला: उसने राजा का हित सोचने वाले में से एक की हत्या करने की युक्ति बनाई थी!

तथ्य यह है कि हर्बोना को फाँसी के बारे में मालूम हो चुका था कि मृत्युदण्ड का यह उपकरण खुले में बनाया गया था और सभी को दिखाई दे रहा था (देखें 5:14 पर टिप्पणियाँ)। हामान चाहता था कि जनता मोर्दकै की हत्या को देखे; अब उसकी मृत्यु को सब लोग देखनेवाले थे। उसकी इस इच्छा को देखा जाना था (परन्तु उसकी प्रशंसा और सराहना किए जाने की इच्छा नहीं) जो अन्ततः उसकी मृत्यु में देखा गया।

आयत 10. राजा की आज्ञा के अनुसार, **हामान उसी खम्भे पर जो उसने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था, लटका दिया गया**। फिर, अपने शत्रु की मृत्यु के साथ, **राजा का गुस्सा ठण्डा पड़ गया**। उसने उस व्यक्ति पर अपना क्रोध उतारा, जिस पर एस्तेर ने उसके प्राण लेने की धमकी दिए जाने का आरोप लगाया। अब, ऐसा प्रतीत होता है, उसने सोचा कि जो कुछ हुआ सब अच्छा हुआ।

परन्तु, यहूदियों की समस्या पूरी तरह से समाप्त नहीं हुई थी। राजा के अधिकार के साथ किया गया हामान का आदेश: एक निश्चित तिथि पर, आनेवाले

वर्ष में, यहूदियों का सत्यानाश करना था। राजा की आज्ञा को निरस्त या परिवर्तित नहीं किया जा सकता था। यहूदी लोग अभी भी खतरे में थे। कहानी के अगले अध्याय में मालूम होता है कि यह अन्तिम समस्या कैसे दूर हुई।

अनुप्रयोग

परमेश्वर के लोगों के साथ पहचान (7:3)

इससे पहले, एस्तेर जानबूझकर राजा को यह बताने को टालती थी कि वह एक यहूदी थी। वह स्वयं को परमेश्वर के लोगों (2:10, 20) के साथ पहचाने जाने से घबरा रही थी। अन्त में, परमेश्वर के उचित मार्गदर्शन के माध्यम से, अपनी जाति के लोगों के बारे में उसकी चुप्पी ने सबसे अच्छा काम किया। परन्तु, ऐसा हो उसके लिये, जब महत्वपूर्ण समय आए, तब उसे यह कहने के लिये तैयार रहना था कि वह एक यहूदी थी। अपने सम्मान के लिये, स्वयं को एक यहूदी के रूप में पहचाने जाने और अपने लक्ष्य को अपने लोगों के साथ जोड़ने के लिये उसने ऐसा किया।

आज के मसीहियों को, स्वयं को परमेश्वर के लोगों, कलीसिया के साथ पहचान करने के लिये तैयार रहना चाहिए, यहाँ तक कि गर्व भी होना चाहिए। यीशु ने कलीसिया के साथ अपनी पहचान बनाई। जब शाऊल मसीहियों को सता रहा था, तो यीशु ने उससे पूछा, "हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?" (प्रेरितों 9:4)। मसीह की देह के सदस्यों को सताना स्वयं यीशु मसीह को सताना था। वास्तव में, पौलुस ने लिखा है कि कलीसिया "उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है" (इफि. 1:23)। यदि हम मसीह के साथ पहचाना जाना चाहते हैं, तो हमें कलीसिया के सक्रिय सदस्य होने की आवश्यकता है। बाइबल के अनुसार, कोई भी वास्तव में मसीह की कलीसिया का हिस्सा बने बिना मसीह के पीछे चलनेवाला नहीं हो सकता।

क्या एस्तेर को हामान के प्राण बचाने का प्रयास करना चाहिए था? (7:7, 8)

हम यह प्रश्न कर सकते हैं कि यदि, जब हामान ने दया की भीख माँगी, तो क्या एस्तेर को उसे क्षमा कर देना चाहिए और राजा से उसके प्राणदान माँगने चाहिए। क्या इस तरह की प्रतिक्रिया से परमेश्वर का उत्तम से उत्तम प्रतिनिधित्व करना नहीं होता, जो हामान जैसे पापियों सहित सब लोगों से प्रेम करता है? स्तिफ़नुस के समान उसका व्यवहार क्यों नहीं था, जो उन लोगों के लिये प्रार्थना करता था जिन्होंने उसपर पथराव किए (प्रेरितों 7:60)?

इन प्रश्नों का उत्तर कई तरीकों से दिया जा सकता है। (1) शायद, यदि वह चाहती थी, तो भी वह उस समय राजा के मन को बदल नहीं सकती थी। हामान के विरुद्ध आरोप को देखते हुए, निश्चित रूप से एस्तेर के लिये उसका बचाव करना खतरनाक होगा। जॉयस जी. बाल्डविन ने कहा, "जबकि उसने सहायता करने की

इच्छा की थी पर एस्तेर के पास उसे बचाने के लिये कुछ भी नहीं था जो वह कर सकती थी।"[12] (2) वह जो भी करने की इच्छा रखती थी, पर उसे करने का अवसर उसके पास नहीं था क्योंकि राजा के प्रवेश ने हामान और उसके बीच की बातचीत को बाधित कर दिया था। (3) अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि एस्तेर को न केवल अपने बारे में सोचना था और हामान ने उसे व्यक्तिगत चोट भी पहुँचाई थी; परमेश्वर के लोगों के प्रतिनिधि के रूप में, यह उसकी जिम्मेदारी थी कि वे अपने शत्रु को नष्ट होते हुए देखें। हामान के जीवित होने से, इस्राएल कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकता था। (4) पुराना नियम यह नहीं सिखाता था कि मनुष्य को व्यक्तिगत बदला लेना चाहिए; इसके बदले, यह सुझाव दिया गया कि मनुष्य को बुराई के बदले अच्छाई करनी चाहिए। फिर भी, यह नए नियम से भिन्न था। इस्राएल एक जीवित राष्ट्र था जिसे शारीरिक सुरक्षा की आवश्यकता थी। नए नियम के समय में, परमेश्वर के चुने हुए लोग आत्मिक लोग हैं जिन्हें आत्मिक संरक्षण प्रदान किया जाता है। मसीही के रूप में, हमें अपने शत्रुओं को नष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम जानते हैं कि परमेश्वर स्वयं अपने समय में ऐसा करेगा। (5) परिस्थितियाँ भी भिन्न थीं। भले ही स्तिफनुस की मृत्यु हो गई, परन्तु परमेश्वर का राज्य जारी रहा। यदि यहूदियों को नष्ट कर दिया गया होता, तो परमेश्वर के राज्य को संसार में लाने की परमेश्वर की योजना विफल हो चुकी होती।

परमेश्वर का न्याय और हामान की मृत्यु (7:10)

विचित्र बातों से भरी इस पुस्तक में शायद सबसे विचित्र घटना यह है कि हामान को "उसी खम्भे पर जो उसने मोर्दकै के लिये तैयार कराया था, लटका दिया गया" (7:10)। ऐसा विचार जिसमें किसी को आघात पहुँचने की सम्भावना होती है, जब वह दूसरों को आघात पहुँचाने की युक्ति करता है, बाइबल में कई बार मिलता है। हामान की मृत्यु प्रसिद्ध नियम से मेल खाती है कि दुष्ट अपने हाथों के कामों का दण्ड पाएँगे। आइए हम निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करें:

> जो उपद्रव दुष्ट लोग करते हैं, उससे उन्हीं का नाश होता है, क्योंकि वे न्याय का काम करने से इनकार करते हैं (नीति. 21:7)।
>
> जो गड्ढा खोदे, वही उसी में गिरेगा, और जो पत्थर लुढ़काए, वह उलटकर उसी पर लुढ़क आएगा (नीति. 26:27)।
>
> जैसा तू ने किया है, वैसा ही तुझ से भी किया जाएगा, तेरा व्यवहार लौटकर तेरे ही सिर पर पड़ेगा (ओबद्याह 15)।

दानिय्येल को सिंहों की मांद में डाल दिया गया था, परन्तु परमेश्वर की सहायता के कारण, वह हानि पहुँचाए जाने से बच गया (यह प्रमाणित करते हुए कि वह एक धर्मी पुरुष था)। बाद में, राजा ने दानिय्येल के आरोपियों को उनके परिवारों के साथ उसी मांद में फेंक दिया। उन्हीं सिंहों ने उन्हें खा लिया (दानिय्येल

6:24) जो उन्होंने दानिय्येल को मारने के लिये उपयोग करने का इरादा किया था।

नाबोत की दाख की बारी की चोरी और नाबोत की हत्या, अहाब का दण्ड उसे देना काव्यात्मक न्याय का एक और मामला है। जब अहाब की मृत्यु हो गई, तो कुत्तों ने उसी जगह पर उसका लहू चाटा, जहाँ उन्होंने नाबोत के लहू को चाटा था (1 राजा. 21:19; 22:38)।

हम दूसरों के साथ कुछ भी करने की युक्ति रच सकते हैं जो हम पर ही आ पड़ती है। हामान के बारे में कहानी का सबसे अच्छा अनुप्रयोग इस बात को याद रखने के लिये है "क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा" (गला. 6:7)।

भजनकार ने कहा है,

> देख, दुष्ट को अनर्थ काम की पीड़ाएँ हो रही हैं, उसको उत्पात का गर्भ है, और उससे झूठ का जन्म हुआ। उसने गड़हा खोदकर उसे गहिरा किया, और जो खाई उसने बनाई थी उस में वह आप ही गिरा। उसका उत्पात पलट कर उसी के सिर पर पड़ेगा; और उसका उपद्रव उसी के माथे पर पड़ेगा (भजन 7:14-16)।

जब हम पाप करते हैं, तो हम एक अनन्त गड्ढा खोदते हैं, और अनिवार्य रूप से हम उसमें गिर जाते हैं। स्वार्थपूर्ण इरादे जो दूसरों को हानि पहुँचा सकते हैं, वे हमें भी हानि पहुँचा सकते हैं जब तक कि हम उनसे पश्चाताप नहीं करते हैं।

समाप्ति नोट्स

[1]एफ. बी. ह्युए, जूनियर, "एस्तेर," में *दि एक्सपोजिटर'स बाइबल कॉमेन्ट्री*, वॉल्यूम 4, *1 राजा-अय्यूब*, एड. फ्रैंक ई. गैबेलिन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1988), 825. [2]रुबेन रतज़लफ एण्ड पॉल टी. बटलर, *एज्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर*, बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1979), 353. [3]कैरी ए. मूरे, *एस्तेर*, दि एंकर बाइबल, वॉल्यूम 7बी (न्यूयॉर्क: डबलडे & कंपनी, 1971), 70. [4]डी. जे. ए. क्लिन्स, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, द न्यू सेंचुरी बाइबल कॉमेन्ट्री, (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1984), 311. [5]"क्रिया" जिसका अनुवाद "पूछा" किया गया है वास्तव में इब्रानी पाठ में दोहराया गया है और इसका शाब्दिक अनुवाद है "कहा, और से कहा" या "कहा, कह रहा।" पुनरावृत्ति किसी लेखन त्रुटि के कारण हो सकती है। यदि नहीं, तो यह "राजा के परेशान होने की स्तर का संकेत दे सकता है: वह इतना क्रोधित है कि वह केवल थूक सकता है" (जॉन डी. लेवेन्सन, *एस्तेर: अ कॉमेन्ट्री*, दि ओल्ड टेस्टामेन्ट लाइब्रेरी [लुईसविले: वेस्टमिंस्टर जॉन नॉक्स प्रेस, 1997], 102-3)। [6]सी. इ. डेमारे, "बुक ऑफ एस्तेर," में *बीकॉन बाइबिल कॉमेन्ट्री*, वॉल्यूम 2, *यहोशु थ्रू एस्तेर* (केन्सास सिटी, मिसौरी: बीकन हिल प्रेस, 1965), 688. [7]लेवेन्सन, 103. [8]सैमुएल पगान, "एस्तेर," इन *दि इंटरनेशनल बाइबल कॉमेन्ट्री*, एड. विलियम फार्मर (कॉलेजविले, मिन.: लिटर्जिकल प्रेस, 1998), 717. [9]एच. नील रिचर्डसन, "द बुक ऑफ एस्तेर," में *दि इंटरप्रेटर'स वन वॉल्यूम कॉमेन्ट्री ऑन द बाइबल*, एड. चार्ल्स एम. लेमन (नैशविले: एबिंगडन प्रेस, 1971), 236. [10]कैरेन एच. जॉब्स के अनुसार, "रनवास के सरकारी नियम ने तय किया कि रनवास की किसी स्त्री के साथ कोई भी नहीं परन्तु केवल राजा को छोड़ा जा सकता है," और "दूसरों की उपस्थिति में भी, कोई पुरुष राजा के रनवास में सात चरणों के भीतर किसी स्त्री के पास नहीं पहुँच पाता था" (कैरेन एच. जॉब्स, *एस्तेर*,

NIV एप्लीकेशन कॉमेन्ट्री [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ोंडर्वन, 1999], 165)। देखें क्लिंस, 312; प्लूटार्क *आर्टेक्सेरसेक्स* 27.1.

[11]किसी दोषी मनुष्य के चेहरे को ढाँकने की प्रथा यूनानियों और रोमियों में एक सामान्य बात थी (क्विंटस कर्टियस *हिस्ट्री ऑफ अलेक्जेंडर* 6.8.22; हिस्ट्री *ऑफ रोम* 1.26), जबकि फारसियों के बीच यह अनावश्यक है। इस कारण से, ए. डब्ल्यू. स्ट्रीन ने इब्रानी पाठ को थोड़ा बदलने का सुझाव दिया, यह कहने के लिये कि "उसका चेहरा निस्तेज (शर्म और दुःख के साथ)" हो गया (ए. डब्ल्यू. स्ट्रीन, *द बुक ऑफ एस्तेर*, द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एण्ड कोलोस्पिटल्स [कैम्ब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रेस, 1907], 39). इसे LXX से कुछ समर्थन मिलता है, जिसमें "उसका रूप बदल गया" बताता है।

[12]जॉयस जी. बाल्डविन, *एस्तेर*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1984), 93.